L.N MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- O II
B.A PAPER- O III
PSYCHOLOGY (HONOURS)
PSYCHOPATHOLOGY
TOPIC-(Contribution of Rollo May 1909)

Dr. Pramod Kumar Sah
Assistant-Professor
Guest Teacher
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)
pramodkumarsah2018@gmail.com

रोलो मे योगदान (Contribution of Rollo May 1909)

रोलो मे का जन्म ओहियो (Ohio) में 1909 में हुआ था। इन्होंने पी०-एच० डी० की उपाधि कोलम्बिया विश्वविद्यालय (Columbia University) से प्राप्त किया और पहले अमेरिकन मनोवैज्ञानिक हैं। जिन्होंने अस्तित्ववादी मनोविज्ञान (existential psychology) को उनके यूरोपियन सहकर्मी (colleague) को गुमान देन था - को समर्थन प्रदान किया अपने यूरोपियन सहकर्मियों अर्थात बिन्सवैंगर (Binswanger) तथा बॉस (Boss) के समान ही मनश्चिकित्सा (psychotherapy) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किये। इनके पुस्तकों में तीन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं (Existential Psychology) 1969,

अन्य अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों के समान वे मनुष्यों के अस्तित्ववादी दुनिया में बने रहने की आवश्यकता पर बल देते हैं। क्योंकि मनुष्य अपने वातावरण से अलग नहीं हो सकता है। इसलिए दोनों के बीच एक स्वतः सम्बन्ध होता है। जिसमें अस्तित्व के तीन तरीका (modes) मुख्य होते हैं भौतिक एवं जैविक अन्य लोगों का सामाजिक वातावरण तथा उसके भीतरी स्वभाव के साथ उसका अपना सम्बन्ध की स्थापना तथा रूप तथा पर बल दिया जाता है। कि व्यक्ति किस तरह से अस्तित्व को अपनायेगा यह चुनने का उत्तरदायित्व स्वयं व्यक्ति पर होता है। और वह यह वर्तमान भावों को पूरा करने के लिए किये जाने वाले क्षमता के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है। व्यक्ति को अपने अस्तित्व की समाप्ति का अंदाज होता है और यह अंदाज से उसे चिन्ता उत्पन्न होता है। अतः कोई व्यक्ति अपने मूल अन्त। होता है।

व्यक्ति भी पूरा करने में असमर्थ रहता है तो उसके उसमें दोष-भाव उत्पन्न होता है। मे ने व्यक्ति के भीतर दो तरह के संवेगों (emotions) की पहचान किया है। चिन्ता एवं दोष भाव। इन संवेगों पर बल डालने के अतिरिक्त मे ने व्यक्ति की रचना, प्रतिनिधि करने की क्षमता की पहचान करके व्यक्ति के धनात्मक पहलू पर बल डाला है। उसमें विभिन्न सम्भावनाओं में से उत्तम सम्भावना को चयन करने की रचना व्यक्ति का सम्मिलित होती है। उनके अनु धनात्मक पहलू का एक मुख्य पहलू प्यार या स्नेह (Love) है जिसके उन्होंने चार तत्व बतलाया है। सेक्स, इरोस अर्थात महत्त्वपूर्ण लोगों के सम्पर्क स्थापित करने की क्षमता, फिलिया अर्थात दूसरे के कल्याण के लिए चिन्तित रहना तथा एगेप अर्थात दूसरों के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्ध के लिए चिन्ता।

(अस्तित्ववादी स्नायुविकृति) (Existential Neurosis)

तीनों प्रमुख अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक अर्थात बिन्सवैंगर (Binswanger) बॉस तथा मे ने मनोविकृतियों में सबसे अधिक अभिरुचि दिखलाया है। फ्रैंकल ने रोगी या लोगों के स्नायुविकृति (neurosis) के एक नये प्रकार की पहचान किया जिसे अस्तित्ववादी स्नायुविकृति की संज्ञा दी गयी इस पर की सबसे पहले सल्वाटोर माडी ने 1967 में की गयी स्नायुविकृति में कई लक्षण बतलाये गये जिनमें मूल्यहीन प्रवृत्ति अधिक हो जाती है तथा उसमें अपनी पहचान की कमी होती है। उसे अपने रोजमर्रा की क्रियाओं में अभिरुचि नहीं रह जाती है। उसे समाज में विश्वास नहीं होता है। भावात्मक रूप से वह अर्थ की असमर्थ करती है तथा उसमें गहरी विषाद की भाव भी उत्पन्न होता है। ऐसे लोगों को अपनी जिन्दगी का अर्थ समझ में नहीं आता है तथा वह अपनी जिन्दगी से उदासीन एवं निरुत्साही

Scanned with CamScanner

निरपेक्षहीन समझती है। सामान्यतः यह देखा गया है कि जिस व्यक्ति को सतत तनाव की स्थिति में क्लिष्ट सामाजिक परिवर्तन के समक्ष होने तनाव से बहुत दिनों तक गुजरना पड़ता है। तो उसके व्यक्ति में अस्तित्ववादी व्याधि विकृति की उत्पत्ति होती है।

(अस्तित्ववादी मनोविज्ञान की आलोचना)

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान की आलोचना कई आधारों पर किया गया है। आलोचना के बिंदु निम्नांकित है।

(I) कुछ आलोचकों का मत है कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान को दार्शनिक अनुमान तथा ईश्वर परक अंदाज के अध्ययन के क्षेत्र में ढकेल दिया है जो मनोविज्ञान के वैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक स्वरूप के विरुद्ध है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में वस्तुनिष्ठ विधि तथा नियम की कमी है। इस तरह की वस्तुनिष्ठता के अभाव में आधुनिक युग में जहाँ प्रयोगात्मक विज्ञान पर अधिक-से अधिक बल डाला जाता है अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के स्वरूप को स्वीकार करना सम्भव नहीं है। आलोचकों का मत है कि अस्तित्ववाद की पहचान के साथ मनोविज्ञान ने अपना चक्र (cycle) पूरा कर लिया है। मध्य युग के पूर्व आत्मनिष्ठता पर प्रारम्भ होकर प्रयोगात्मक एवं वस्तुनिष्ठ मनोविज्ञान से होते हुए पुनः आत्मनिष्ठ मनोविज्ञान पर आ गया है।

(II) व्यवहारवादियों तथा सम्मानित प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिकों ने प्रायः यही दावा प्रस्तुत किया है कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में आत्मनिष्ठता, द्वैतवाद तथा वस्तुनिष्ठ संप्रत्ययों की प्रवृत्ति कम है। इसकी विधि अन्तर्निरीक्षण की पौराणिक विधि से मिलती-जुलती है। अतः अस्तित्ववादी मनोविज्ञान को वैज्ञानिक मनोविज्ञान के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकृत करना सम्भव नहीं है।

(III) मानव प्रकृति तथा व्यक्ति की अन्तर्निहित अवस्थाओं की व्याख्या करने में अस्तित्ववादी मनोविज्ञान ने कुछ अस्पष्ट एवं अनुपयुक्त भाषा का उपयोग किया है। इनके पारिभाषिक व्याख्याएँ इतनी अस्पष्ट है कि उनसे कोई स्पष्ट तस्वीर व्यक्ति के मन में नहीं उभरता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के योगदान को महत्वपूर्ण माना गया है तथा यह सम्पूर्ण प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के लिए एक चुनौतीपूर्ण रहा है।

जैसे कि हम जानते है। मानवतावादी मनोविज्ञान तथा अस्तित्ववादी मनोविज्ञान दोनों को ही मनोविज्ञान के तृतीय बल में शामिल किया गया है कि दोनों मनोविज्ञान में समानता यह है कि दोनों में ही मानव प्रकृति की व्याख्या के लिए सम्पूर्ण जीव पर बल डाला गया है। इस सामान्य समानता के अतिरिक्त भी इन दोनों के कुछ समानताएं हैं जिनका वर्णन निम्नलिखित है।

(i) दोनों ही मनोविज्ञानों में व्यक्ति की आन्तरिक संवेदनाओं अनुभूतियों, प्रतिमाएं, भाव संवेगात्मक क्षमताएं आदि के अध्ययन पर लगभग समान रूप से बल डाला जाता है। इसलिए दोनों में आत्मनिष्ठता पर अधिक बल डाला गया है।

(ii) दोनों मनोविज्ञान की विधियाँ उपागमनिष्ठ है। अर्थात दोनों मनोविज्ञान मानव व्यक्ति के आन्तरिक अनुभूतियों की अध्ययन एवं विश्लेषण करने के लिए घटना-क्रिया-प्रधान-विधि को महत्वपूर्ण माना गया है। दूसरे शब्दों में दोनों मनोविज्ञानों द्वारा व्यक्ति की वैयक्तिकता तथा अनोखेपन पर अधिक बल डाला गया है। इन दोनों मनोविज्ञान में यह मत जाहिर किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। तथा संसार के प्रति अपनी स्वतंत्र विचार रखने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र है।

Dr. Pramod Kumar Singh,
Date- 11/09/2020.
Sub- Existential Psychology. IV

Scanned with CamScanner